आंतरिक एकता ही है

व्यावहारिक वेदांत का अभिप्राय

स्वामी राम

वह मनुष्य जो उच्चतम स्तर पर पहुंच जाता है, वह समस्त प्राणी मात्र से अपनी आत्मिक एकता अनुभव करने लगता है। यहां अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन की चर्चा अनुपयुक्त न होगी।

एक बार वह अपने राष्ट्रभवन से महासभा का उद्घाटन करने जा रहे थे। सड़क के किनारे मार्ग में उन्होंने देखा कि एक सुअर दलदल में फंसा हुआ है। वह बेचारा दलदल से मुक्ति पाने के लिए बुरी तरह से अपने हाथ पैर फेंक रहा था, जिसके कारण वह बिल्कुल थक सा गया था, फिर भी वह अपनी जान बचाने के लिए बराबर प्रयत्नशील था, किंतु दुर्भाग्यवश जितना ही अधिक वह प्रयास करता था, उतना ही अधिक फंसता जाता था। वह दुख और थकावट से बुरी तरह कराह रहा था। राष्ट्रपति यह दुखद दृश्य सहन न कर सके, वह अपने रथ से उतर पड़े और अपने अंगरक्षकों तथा अन्य लोगों की सहायता से उन्होंने सुअर को दलदल से निकाल लिया। यद्यपि उनके बहुमूल्य कपड़े गंदे हो गये किन्तु उन्होंने उसकी तनिक भी चिन्ता न की और वह उन्हीं कपड़ों में सीधे महासभा को चल दिए, जिससे वह वहां देरी से पहुंचे। जब महासभा के सदस्यों को उनकी सहृदयता का पता चला, तो वे सब एक स्वर से उनकी प्रशंसा करने लगे और कहने लगे कि उनके राष्ट्रपति बहुत दयालु, सज्जन, कोमल चित्त और उदार हैं। यह सुनकर राष्ट्रपति कुछ लज्जित से हुए और तुरन्त बीच में ही बात काटकर बोले उठे, ''नहीं, नहीं, नहीं, कृपा करके ऐसा मत कहिए। मैंने किसी पर कोई दया नहीं की। उस सुअर की कराह सुनकर मेरा हृदय द्रवित (दुखित) हो उठा, जैसे कि उसका दुख छूत की बीमारी की तरह मुझसे लिपट गया हो और मैं उसके कष्ट को, अपना कष्ट समझकर पीड़ित हो गया। अत: मैंने अपने दुखित हृदय को शान्त करने के लिए उस सुअर को दलदल से निकाला था क्योंकि मैं उसका दु:ख सहन न कर पा रहा था, मैंने तो केवल अपनी पीड़ा दूर की। किसी पर कोई दया नहीं दर्शाई और न किसी दूसरे का कोई दु:ख दूर किया।'' वाह! वाह!! आन्तरिक एकता का यह कितना ऊंचा और प्रशंसनीय उदाहरण है।

उस समय अमेरिका में दास-प्रथा भी प्रचलित थी। बेचारे गरीब, असहाय काले लोगों को पकड़कर, सभ्य कहलाने वाले गोरे अमेरिकन लोगों की गुलामी करने के लिए उन्हें विवश कर दिया जाता था। राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन से, गुलामों पर किये जाने वाले यह जघन्य और पाशविक अत्याचार सहन न हो सके। उन्होंने अपने सत्य संकल्प से यह दृढ़ निश्चय किया कि मैं इस दास-प्रथा को समूल नष्ट कर दूंगा, और अन्त में वह अपने प्रयास में सफल भी हुए। किंतु दुर्भाग्यवश उनके देश के कुछ लोगों को यह बात अच्छी न लगी, और उन्होंने उनके इतने अच्छे लोकोपकारी कार्य के लिए उनकी जान ही ले ली। राम ऐसे मनुष्यों की उदारता, सहृदयता और निस्वार्थ बलिदान की प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकता। उनका हृदय निर्मल था, प्रेम, सहायता, करुणा और अनुकम्पा से भरा हुआ था क्योंकि वह प्राणी-मात्र से अपनी आंतरिक एकता और आत्मिक एकता अनुभव करते थे। ऐसे महान पुरुषों का जीवन धन्य है।

प्रगतिशील धर्म या व्यावहारिक वेदान्त का अभिप्राय यही है कि तुम संपूर्ण-विश्व से अपनी एकता अनुभव करो और दूसरे अन्य लोगों को अपना आप समझो तथा उनके साथ अपने जैसा ही व्यवहार करो। स्मरण रहे कि सबके साथ आत्मिक एकता की अनुभूति ही जीवन में प्रत्येक सफलता की कुंजी है।

तुम कह सकते हो कि दुनिया में बुरे आदमी भी तो बसते हैं, ''हम बुरे आदमियों को कैसे प्यार कर सकते हैं और उनके साथ किसी प्रकार एकता का अनुभव कर सकते हैं? बुरों का साथ भी तो बुरा होता है?'' ऐसे लोगों से राम पूछता है कि वे किन लोगों को बुरा कहते हैं?कदाचित तुम कहो कि बुरे वह लोग कहलाते हैं जो सामाजिक नियमों का उल्लंघन करते हैं या जो दूसरों की भावनाओं का सम्मान नहीं करते। निर्बल मनके होने के कारण वे संसारी प्रलोभनों का प्रतिरोध नहीं कर सकते अथवा जो नितान्त स्वार्थी हैं इत्यादि, इत्यादि। ऐसे ही लोगों को तो बुरा आदमी कहा जाता है। किंतु सोचो, शिशु और छोटे बच्चे भी तो इसी प्रकार का व्यवहार करते हैं क्योंकि उनके मस्तिष्क का पूर्णतया विकास अभी नहीं हो पाया है। उनकी अविकसित बुद्धि होने पर भी तुम उनसे प्रेम और स्नेह करते हो, क्योंकि तुम जानते हो कि वह अभी बच्चे ही हैं और उनकी बुद्धि में अभी परिपक्वता नहीं आई है। ठीक उसी प्रकार तुमको तथाकथित बुरे आदमियों से भी घृणा नहीं करनी चाहिए। निस्संदेह उनके शरीर तो बड़े अवश्य दिखलाई पड़ते हैं किंतु दुर्भाग्यवश उनकी बुद्धि अभी पूर्णरूप से विकसित नहीं हुई है। अब भी वह बच्चों की भांति स्वार्थपरायण हैं। एक प्रकार के वे मानसिक बच्चे हैं। बच्चे तो बच्चे ही कहलायेंगे, चाहे वे स्थूल रूप से बच्चे हों अथवा मानसिक रूप से। बच्चों से तो कोई घृणा नहीं करता, उन्हें तो सब प्यार ही करते हैं। वे अशिष्टता का व्यवहार इसलिए करते हैं, क्योंकि उनके मन या बुद्धि अभी पूर्ण रूप से विकसित नहीं हो पाई है। तुम्हें उनको प्यार से शिक्षा देकर विकसित, शिष्ट और सभ्य बनाना है। वह

भी विश्वव्यापी शक्ति के साथ उसी आत्मिक एकता के सूत्र में वैसे ही बंधे हुए हैं जैसे कि तुम। वे लोग जिनको तुम बुरा कहते हो अथवा जिनको तुम घृणा की दृष्टि से देखते हो, उनकी बुद्धि के विकसित होने पर एक दिन वह तुम से भी अधिक अच्छे हो सकते हैं। वे बुरे लोग भी तो तुम्हारे अपने आप ही हैं, कोई अपने आपसे घृणा नहीं करता। जब तुम्हारे दांतों से तुम्हारी जिह्वा कट जाती है तो क्या तुम उससे घृणा करने लग जाते हो, अथवा दण्ड देते हो? नहीं, तुम ऐसा नहीं करते, क्योंकि तुम्हारे दांत और तुम्हारी जिह्वा दोनों ही तुम्हारे शरीर के अंग हैं। इसी प्रकार बुरे लोग भी हैं। भले ही उनके नाम, रूप, स्वभाव तुमसे अलग हों किंतु वे सब तुम्हारे साथ आत्मिक एकता के सामान्य सूत्र में संबद्ध हैं। अत: बुरे-भले प्रत्येक मनुष्य को तुम्हें अपने-आप ही समझना चाहिए।

आप लोगों ने विद्युत-शक्ति के चमत्कार अवश्य ही देखे होंगे। बिजली में बल्ब द्वारा प्रकाश फैलाया जाता है, पंखे चलते हैं, ऊष्मक (Heater), शीतलक (Cooler); प्रशीतित्र (Refrigerator); ट्राम मोटर इत्यादि, इत्यादि के चलाने में विद्युत से ही काम लिया जाता है। यद्यपि ये सब यंत्र अपने नाम, रूप और कार्यों के कारण अलग-अलग दिखलाई पड़ते हैं, किंतु इन सबको एक ही विद्युत-शक्ति चलाती है। उनके नाम, रूप और कार्य के अनुसार ऊष्मक (Heater) तथा शीतलक (Cooler) दोनों में पृथ्वी और आकाश का अंतर है। एक यंत्र गर्मी पहुंचाता है तो दूसरा यंत्र सर्दी। जैसे पापी और पुण्यात्मा अलग-अलग समझे जाते हैं वैसे ही इन दोनों यंत्रों का प्रभाव भी अलग-अलग होता है। तो क्या ऊष्मक (Heater) को शीतलक से इसी कारण घृणा करनी चाहिए कि दोनों के स्वभाव और कार्य-क्षेत्र अलग-अलग हैं। नहीं, उन दोनों में भिन्नता केवल उनके भिन्न-भिन्न यंत्र अर्थात् उपाधियों के कारण है, यद्यपि दोनों को एक ही विद्युत-शक्ति चलाती है। उसी प्रकार बुरे और भले, पापी तथा पुण्यात्मा देखने में अपने-अपने स्वभावों और बुद्धियों के कारण अपनी अलग-अलग उपाधियों के कारण भिन्न-भिन्न प्रतीत होते हैं, किंतु दोनों में ब्रह्म की वही एक चैतन्य-शक्ति समान रूप से कार्य करती होती है। अत: वह सब अर्थात् हम सब भी, एक ही विश्वव्यापी आत्मा के साथ सम्बद्ध होने के कारण एक ही हैं।

इसी प्रकार से, यह सब भिन्न-भिन्न पदार्थ, प्रकृति के तत्व और तमाम प्राणी जगत इत्यादि सबमें वही एक विश्वव्यापी शक्ति एक समान कार्य कर रही है। अत: हम सब, उसी शक्ति के कारण, जो हम सबमें ओत-प्रोत हो रही है, आत्मिक एकता के बंधन से संयुक्त हैं। इस विश्वव्यापी शक्ति को आप अल्लाह, ईश्वर, गाड (God) या ब्रह्म जो चाहे कह सकते हैं।

एक सामान्य टेबल-लैम्प (Table lamp) का बल्ब अपने महत्व पर गर्व नहीं कर सकता और न आर्क लैम्प (Arch lamp) अन्य कृत्रिम प्रकाशों से अपने आपको बड़ा समझ सकता है। वास्तव में सारा महत्व तो विद्युत का ही है, जिसके बिना सब यंत्र बेकार हो जाते हैं। इन यंत्रों को यदि बिजली की शक्ति न पहुंचाई जाये तो सब बिलकुल बेकार हैं। इसी प्रकार भिन्न-भिन्न नाम-रूपों वाले पदार्थों की सत्ता केवल एक ही सर्वव्यापी शक्ति के कारण है जिसके द्वारा कण-कण अनुप्राणित हो रहा है। जैसे यदि मुद्रिका से स्वर्ण निकाल लिया जाए अथवा विद्युत उसके यंत्रों से अलग रखी जाए तो सबके सब बेकार हो जाते हैं। उसी प्रकार, विश्व आत्मा के बिना संसार में किसी वस्तु का अस्तित्व नहीं रह सकता। वह ब्रह्म ही सबमें सब कुछ है, वह अद्वैत, अखण्ड तथा पूर्ण है, उसके अतिरिक्त कुछ है ही नहीं। सारी सृष्टि का मूलाधार और आदि कारण वह ही है।

व्यक्तिगत रूप से हमारे पास गर्व करने के लिए कुछ भी नहीं है, क्योंकि ब्रह्म से अलग हमारी कोई सत्ता है ही नहीं। संसार के लगभग सभी धर्म परोक्ष अथवा अपरोक्ष रूप से ईश्वर की सर्वव्यापकता मानते हैं। जब ईश्वर, इस विश्व के छोटे से छोटे कण में, जो अनुमान में भी नहीं लाया जा सकता है, उसमें भी उपस्थित है तो यह बहुत बड़े आश्चर्य की बात है कि उसको प्रत्यक्ष न देखकर, लोगों को केवल सांसारिक पदार्थ ही दिखलाई पड़ते हैं। इस एकता में संसारी अनेकता देखने का कारण केवल अज्ञानता ही है, जिसे माया भी कहते हैं। जब कण-कण में वही व्याप्त हो रहा है, बल्कि यों कहिए कि सब कुछ वही है तो हमको चारों ओर अपने बाहर और भीतर, सबमें उसी एक ईश्वर की झांकी का ही दर्शन करना चाहिए। पदार्थ दृष्टि हटाकर हमको अपने में ब्रह्म दृष्टि पैदा करनी चाहिए, क्योंकि प्रतीयमान अनेकता में ब्रह्म की ही एकता विद्यमान है। कठोपनिषद में कहा गया है कि "वह जो यहां है वह ही वहां है और जो वहां हैं वह यहां भी है।"

तुमको अपने में वह स्थिति उपलब्ध करनी चाहिए, जिससे कि तुम अनुभव कर सको कि समस्त विश्व तुम्हारा ही शरीर है। पशु, पक्षी, पर्वत, पेड़ इत्यादि सब तुम्हारा अपना आप है। बहती हुई नदियां ऐसे हैं जैसे कि तुम्हारी धमनियों में रक्त बह रहा हो। सूर्य और चांद जैसे तुम्हारी आंखें हों। सबके वक्षस्थल में जैसे कि तुम्हारा ही हृदय धड़क रहा है। अपने मस्तिष्क से यह विचार ही मिटा डालो कि तुम दूसरों से भिन्न या अलग हो। तुमको इस बात का पूर्ण निश्चय हो जाना चाहिए कि एक ही चैतन्य-शक्ति सारे विश्व में काम कर रही है। एक ही ऊर्जा शक्ति या नेचर (Nature) जिसको तुम ईश्वर या ब्रह्म भी कह सकते हो, वह सबमें व्यापक और ओतप्रोत है। तुमको उसके साथ अपनी एकता अनुभव करना है। सच बात तो यह है कि तुम उसके साथ एक ही हो। राम इस बात को अनेक प्रकार बार-बार दोहराता है जिससे तुम इस ध्रुव सत्य को अच्छी तरह ग्रहण कर लो और उसको अपने दैनिक-जीवन के व्यवहार में ला सको। इसके बिना आत्मसाक्षात्कार में कोई सफलता नहीं मिल सकती। सबसे आत्मिक एकता की अनुभूति

ही सच्चे धर्म का एकमात्र लक्ष्य है। इस स्थिति को प्राप्त करने के लिए तुम्हें हर सम्भव साधन अपनाना चाहिए।

यदि तुम ईर्ष्या, द्वेष, पक्षपात, प्रतिद्वन्द्विता, घृणा और भेदभाव इत्यादि को मिटाकर अपने हृदय को पवित्र बना लो, सबके साथ अपने जैसा प्रेम करने का अभ्यास कर लो, जिनको तुम अपने शत्रु, प्रतिद्वन्द्वी अथवा विरोधी समझते हो, उनके अपराधों को तुम भूल जाओ और उन्हें तुम क्षमा कर दो, तो सबसे एकता की उच्चतम अवस्था को प्राप्त कर सकते हो। इस प्रतीत होने वाली भिन्नता में जब एकता की अनुभूति हो जाती है या वह मनुष्य, जो इस अन्तर्निहित आत्मिक एकता का साक्षात्कार करता है और जो सबसे अपने ही समान प्रेम रखता है, वास्तव में वह ज्ञानी और प्रबुद्ध है। वह न किसी को हानि पहुंचा सकता है और न उसका कोई अहित कर सकता है। जिस प्रकार भगवान शिव मांसभक्षी, भयानक और कष्टदायक पशुओं के बीच में (बाघ, चीता, सांप, बिच्छू इत्यादि) भी शान्त, निश्चिंत और निर्भय रहते हैं। उसी प्रकार ब्रह्म ज्ञानी भी संसार में निर्भय विचरता है, क्योंकि वह अपने सिवा किसी और को देखता ही नहीं, सबको अपना आप ही समझता है। अत: वह सबको अपने जैसा ही प्यार करता है। जो सबसे प्रेम रखता है, उससे सब प्रेम करते हैं तथा जो सबसे घृणा करता है उससे सब घृणा करते हैं, यही प्रकृति का नियम है।

जब ऐसी ही बात है तब तुम किसी से घृणा क्यों करो? सबसे प्यार क्यों नहीं करते हो? क्यों नहीं अपने चारों तरफ सबसे अपनी आत्मिक एकता अनुभव करते? ऐसा करने से तुम्हें शांतिमय, आनन्दमय और दैवी जीवन प्राप्त होगा। इस प्रकार अब तुम्हें विश्वास हो गया होगा कि अपने ही भले के लिए तुमको सबके साथ एकता अनुभव करनी चाहिए।

मनुष्यों को चाहिए कि इस ध्रुव सत्य को केवल बौद्धिक रूप से ही न समझें वरन् इसको हृदयंगम कर लें कि वह समस्त विश्व से एक हैं, अर्थात् वह उससे अलग नहीं है और यह कि वह ही सबमें सब कुछ है। जितना ही तुम इस विश्व के साथ अपनी एकता के सत्य को समझोगे, उतना ही तुम ईश्वर के निकटतम होगे जो विश्व की आत्मा है।

मनुष्य को अपना द्वैत-भाव दूर करके समस्त अस्पृश्यता मिटा देनी चाहिए ओर सबके साथ अपनी एकता अनुभव करनी चाहिए। सब पदार्थों के साथ केवल एकता की ही अनुभूति नहीं, बल्कि सबको अपना आप ही समझना चाहिए। जैसे कि सारा विश्व उसी एकता में विलीन हो गया हो। तुमको अपने में ऐसी दिव्य दृष्टि पैदा करनी चाहिए कि सब कुछ वही एक है और उसके सिवा और कुछ है ही नहीं, तभी मनुष्य निश्चिन्त और निर्भय हो जाता है। तब उसमें अनन्त शान्ति, शाश्वत आनन्द और असीम शक्ति आ जाती है। प्रकृति के समस्त तत्व उसकी आज्ञा पालन करने के लिए ऐसे बाध्य हो जाते हैं जैसे किसी के अपने हाथ-पांव, उसकी इच्छा के अनुकूल काम करते हैं।

अत: सबके साथ इस अन्तर्निहित आत्मिक एकता को अनुभव करो। वास्तव में तुम तो विश्व-आत्मा से एक ही हो, इसलिए सहज रूप से आत्मसाक्षात्कार के अनन्त और आनन्दमय जीवन का रसास्वादन करो। याद रखो, उस ब्रह्म के सिवा कुछ है ही नहीं और वही तुम हो।

प्रस्तुति:
मीनाक्षी गिरधर